



दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था के लिए
नई राह

भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था के लिए नई राह

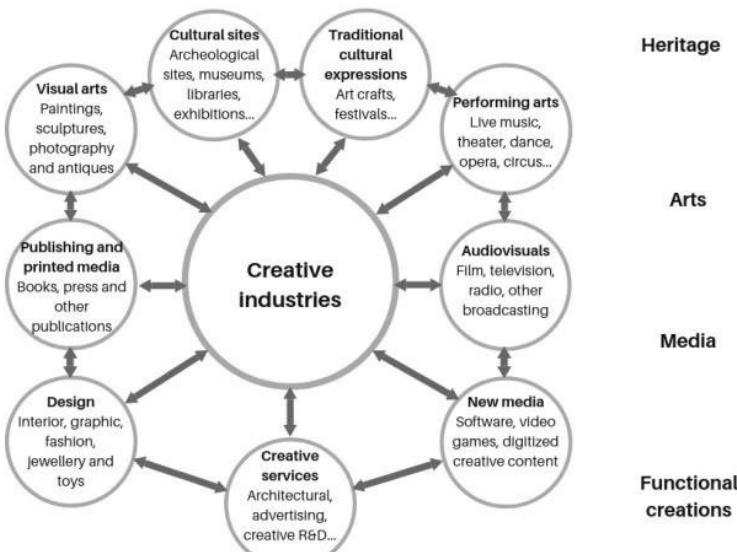
संदर्भ

- भारत में कला और खगोल विज्ञान से लेकर धातु विज्ञान तथा चिकित्सा तक के क्षेत्रों में रचनात्मकता एवं नवाचार का एक लंबा और विविध इतिहास है।
 - चूँकि भारत 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य रखता है, इसलिए नवाचार की एक नई लहर को बढ़ावा देना, विशेष रूप से बुनियादी स्तर पर, महत्वपूर्ण है।
 - रचनात्मकता का न केवल उत्सव मनाया जाना चाहिए बल्कि आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने के लिए रणनीतिक रूप से समर्थन भी दिया जाना चाहिए।

रचनात्मक अर्थव्यवस्था परिवर्द्धन

- वैश्विक रचनात्मक अर्थव्यवस्था में प्रभावशाली वृद्धि देखी गई है:
 - 2022 में, रचनात्मक सेवाओं का निर्यात 1.4 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँच गया, जो 2017 से 29% की वृद्धि है।
 - रचनात्मक वस्तुओं का निर्यात 713 बिलियन डॉलर था, जो 19% की वृद्धि को दर्शाता है।
 - कुल मिलाकर, रचनात्मक अर्थव्यवस्था सालाना 2 ट्रिलियन डॉलर से अधिक उत्पन्न करती है और पूरी दुनिया में लगभग 50 मिलियन रोजगारों का समर्थन करती है।
- UNCTAD के क्रिएटिव इकोनॉमी आउटलुक 2024 के अनुसार, 2022 में प्रमुख योगदानकर्ता सॉफ्टवेयर सेवाएँ (41.3%), अनुसंधान एवं विकास (30.7%) और विज्ञापन, बाजार अनुसंधान तथा वास्तुकला (15.5%) थे।
- साथ ही, भारत ने वैश्विक रचनात्मक अर्थव्यवस्था में पर्याप्त योगदान दिया है। 2019 में, रचनात्मक निर्यात 121 बिलियन डॉलर था, जिसमें IT और डिज़ाइन जैसी सेवाओं का सबसे बड़ा भाग था।
- अकेले डिज़ाइन सेगमेंट में रचनात्मक वस्तुओं के निर्यात का 87.5% भाग था, इसके बाद पारंपरिक कला और शिल्प का लगभग 9% भाग था। 2024 तक, इस क्षेत्र का मूल्य \$30 बिलियन है और यह भारत की लगभग 8% कार्यशील जनसंख्या को रोजगार देता है। अपर्याप्त निवेश, संस्थागत उपेक्षा और अपर्याप्त IP संरक्षण के कारण अधिकांश बुनियादी स्तर के नवाचार अनौपचारिक, अविकसित एवं अपरिचित बने हुए हैं।

रचनात्मकता और नवीनता को समझना



- रचनात्मकता नवाचार की नींव है। इसे चार रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है: विचारपूर्वक एवं भावनात्मक, विचारपूर्वक एवं संज्ञानात्मक, सहज और भावनात्मक, और सहज एवं संज्ञानात्मक।
- रचनात्मकता अंतर्जात (आंतरिक रूप से उत्पन्न) या बहिर्जात (बाहरी रूप से प्रभावित) हो सकती है।
- जैसे, भारतीय संदर्भ में, कई बुनियादी स्तर के नवाचार विचारपूर्वक एवं संज्ञानात्मक या स्वतःस्फूर्त और संज्ञानात्मक प्रकार के अंतर्गत आते हैं, जैसे मृदा से बना रेफ्रिजरेटर, पैडल से चलने वाली वाशिंग मशीन और उभयचर साइकिल।
- रचनात्मक से अभिनव तक की यह प्रक्रिया प्रायः फंडिंग, औपचारिक मान्यता और तकनीकी मार्गदर्शन की कमी के कारण बाधित होती है, विशेषकर ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी भारत में। रचनात्मकता व्यक्तिगत स्वरूप में वृद्धि करती है, लेकिन नवाचार के लिए सिस्टम और संरचनाओं की आवश्यकता होती है।

बुनियादी स्तर पर नवाचार के सामाजिक और आर्थिक निहितार्थ

- जमीनी स्तर पर नवाचार दोहरे उद्देश्य को पूरा करता है: आर्थिक सशक्तीकरण एवं सामाजिक परिवर्तन। स्थानीय नवोन्मेषकों को सशक्त बनाने से:
 - रोजगार और आजीविका के अवसर सृजित हो सकते हैं।
 - संदर्भ-विशिष्ट समाधानों का उपयोग करके स्थानीय समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।
 - शीर्ष-स्तरीय तकनीकी आयातों पर निर्भरता कम की जा सकती है।
 - हाशिये पर पड़े समुदायों को नवाचार अर्थव्यवस्था में लाकर समावेशन को बढ़ाया जा सकता है।
- ग्रासरूट्स इनोवेशन ऑर्गेनेशन नेटवर्क (GIAN) जैसे संगठनों ने स्थानीय नवाचारों की पहचान करने और उनका समर्थन करने का प्रयास किया है।
- “एक जिला, एक नवाचार” जैसा मॉडल, जो सफल “एक जिला, एक उत्पाद” पहल के समान है, क्षेत्र-विशिष्ट आर्थिक विकास सुनिश्चित करते हुए स्थानीय सरलता को उजागर करने में सहायता कर सकता है।

भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था में चुनौतियाँ

- नीति और संस्थागत चुनौतियाँ:** स्टार्टअप इंडिया, अटल इनोवेशन मिशन और नेशनल इनोवेशन फ़ाउंडेशन जैसी संस्थाओं ने आधारभूत कार्य किया है, हालाँकि, IP सुरक्षा के बारे में जानकारी की कमी, क्रृषि की कमी, नौकरशाही बाधाएँ एवं वर्तमान शिक्षा में नवाचार की कमी जैसी कई कमियाँ अभी भी बनी हुई हैं।
- डिजिटल डिवाइड:** ग्रामीण और अर्ध-शहरी भारत के एक महत्वपूर्ण हिस्से में डिजिटल टूल और कनेक्टिविटी तक पहुँच का अभाव है, जो रचनात्मक पेशेवरों और इनोवेटर्स के लिए महत्वपूर्ण ज्ञान, बाजार और सहयोग प्लेटफॉर्म तक पहुँच को प्रतिबंधित करता है।
- वृद्ध कारीगर:** भारत के कई पारंपरिक शिल्प और रचनात्मक प्रथाएँ वृद्ध कारीगरों द्वारा बनाए रखी जाती हैं। औपचारिक मान्यता, स्थायी आय और संस्थागत समर्थन की कमी के कारण युवा पीढ़ी प्रायः इन शिल्पों को अपनाने में अनिच्छुक होती है।
- रचनात्मकता और नवाचार के बीच अंतर:** यद्यपि व्यक्तिगत रचनात्मकता प्रचुर मात्रा में है, इन विचारों को स्केलेबल नवाचारों में बदलने के लिए संरचित तंत्र की कमी है। यह अंतर सीमित फंडिंग, मैटरशिप की अनुपस्थिति और कमज़ोर उद्योग संबंधों के कारण है।

वैश्विक सर्वोत्तम अभ्यास: एंट्रोडैम परियोजना (इंडोनेशिया)

- बायोमिमिक्री और रचनात्मक नवाचार का एक सम्मोहक उदाहरण इंडोनेशिया के बेकासी के बिनस स्कूल के छात्रों द्वारा बनाया गया एंट्रोडैम प्रोजेक्ट है। शहरी बाढ़ की चिरस्थायी चुनौती का सामना करते हुए, छात्रों ने समाधान के लिए प्रकृति की ओर रुख किया। प्रेरणा लेते हुए:

 - भारतीय हार्वेस्टर चींटियाँ:** अपनी परिष्कृत सुरंग प्रणालियों के लिए जानी जाती हैं जो जल को दूर ले जाती हैं,
 - गुलाब की पंखुड़ियाँ:** जिनकी परतदार सतह जल के प्रवाह को निर्देशित करती हैं,
 - लेटस लीफ कोरल:** अपने जटिल शाखाओं वाले नेटवर्क के साथ,
 - विशाल पिल मिलिपेड:** जो कॉम्पैक्ट, लचीले डिजाइन को प्रदर्शित करता है,
 - फ्रिगेट पक्षी:** जो समुद्री परिस्थितियों में जीवित रहने के लिए अपने जल-प्रतिरोधी गले की थैलियों का उपयोग करते हैं,

- उन्होंने एक बायोमिमेटिक बाढ़ सुरक्षा प्रणाली तैयार की जो प्राकृतिक जल प्रवाह का विरोध करने के बजाय उनके साथ काम करती है।

रचनात्मक अर्थव्यवस्था को समर्थन देने वाली प्रमुख पहलें

- यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज नेटवर्क:** जयपुर, वाराणसी और श्रीनगर जैसे भारतीय शहर इस वैश्विक पहल में शामिल हुए हैं, जो शिल्प, डिजाइन एवं विरासत में स्थानीय रचनात्मकता को मान्यता देते हैं तथा उसका समर्थन करते हैं। यूसीसीएन ज्ञान के आदान-प्रदान, सांस्कृतिक पर्यटन और सतत शहरी विकास को बढ़ावा देता है।
- रचनात्मक अर्थव्यवस्था पर अखिल भारतीय पहल:** आर्थिक विकास के एक प्रमुख स्तंभ के रूप में रचनात्मक उद्योगों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक राष्ट्रीय ढाँचा। इसमें नीति समर्थन, उद्यमिता सुविधा और रचनात्मक क्षेत्र में कौशल विकास शामिल है।
- क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (ZCC):** ये केंद्र त्योहारों, प्रशिक्षण कार्यशालाओं और कलाकार सहायता कार्यक्रमों के माध्यम से क्षेत्रीय संस्कृति एवं विरासत को बढ़ावा देते हैं। वे रचनात्मक अभिव्यक्ति में ग्रामीण-शहरी विभाजन को समाप्त करने में सहायता करते हैं।
- राष्ट्रीय रचनाकार पुरस्कार:** यह नया लॉन्च किया गया पुरस्कार भारत के उन रचनाकारों को मान्यता देता है जिन्होंने कला, कहानी कहने और डिजिटल मीडिया के माध्यम से प्रभाव डाला है। यह न केवल प्रतिभा को सम्मानित करता है बल्कि युवाओं को रचनात्मक करियर बनाने के लिए प्रेरित भी करता है।

निवेश और नीति समर्थन: समय की माँग

- जैसे-जैसे भारत 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है, एक मजबूत, समावेशी नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र को रणनीति का केंद्र बनाना चाहिए। इसके लिए एक सहक्रियात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता है:

 - स्कूल स्तर से रचनात्मक शिक्षा और डिजाइन सोच में निवेश करना।
 - जिला-स्तरीय नवाचार केंद्र और सामुदायिक प्रयोगशालाएँ बनाना।
 - अनौपचारिक और पारंपरिक ज्ञान को मान्यता देने के लिए आईपी कानूनों में सुधार करना।

- जलवायु वित्त और सीएसआर निधियों का एक निश्चित हिस्सा बुनियादी स्तर की रचनात्मक परियोजनाओं को आवंटित करना।
- स्केलेबल नवाचारों को सह-निर्माण करने के लिए सार्वजनिक-निजी-लोगों की भागीदारी को प्रोत्साहित करना।

Source: TH

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में बुनियादी स्तर के नवाचारों की भूमिका पर चर्चा कीजिए। कौन सी चुनौतियाँ उनकी मापनीयता में बाधा उत्पन्न करता हैं और उनका समाधान कैसे किया जा सकता है?

